साथजी पेहेचानियो

साथजी पेहेचानियो, ए बानी समया फजर।
हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर।।

सुरता तीनों ठौर की, इत आई देह घर।
ए तीनों रोसन नासूत में, किया बेवरा इमामें आखिर।।

कृपा करनी माफक, कृपा माफक करनी ।
ए दोऊ माफक अंकूर के, कई कृपा जात ना गिनी।।

कई आए अनुभव लेयके, सो पीछे दिए पटकाए।
धनी दया अंकूर बिना, किन सत सुख लियो न जाए।।

कदी सौ बरस रहो साथ में, धनी अनुभव सौ बेर।
मूल अंकूर दया बिना, ले करमें डाले अंधेर।।

महामत कहे तिन वास्ते, ए तीनों हैं सामिल।
करनी कृपा अंकूर, वाके छिपे ना अमल।।